

1,6001. 3,10494. R. 3,57,26. प्रसक्त सिंहः किल तो चर्क्य Ragh. 2,27. अथ गात्राणि ते कङ्काः श्येना गोमायवस्तथा । कर्पतु भुवि MBu. 1,5992. R. 5,36,35. mit sich fortziehen: मातृत्वालयं श्रीमान्कपिर्व्योमचरो म-
हान् । संप्रयात्येव गगनं कर्पन्निव दिशो दश ॥ 33,13. कपिना कृष्यमाणानि
महृधाणि 15. trop.: ममैवशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः । मनःपठानी-
न्द्रियाणि प्रकृतिस्यानि कर्पति ॥ Bhāg. 13,7. रसानुसारिणी त्रिक्वा कर्प-
त्येव रसान्प्रति MBu. 3,13428. कृते दोषाश्च ज्ञानम् पुत्रस्नेहादकृष्यत 2,
1776. तदीयवदनाम्बुजकृष्टचेतम् Duṛtas. 83,2. अक्रातीत् Bhāṭṭ. 13,47.
122. med.: स कृष्यमाणो भीमेन कर्पमाणश्च पाण्डवम् MBu. 1,6289. कर्प-
माणो वज्रिनीम् ein Heer mit sich führend MBu. in Benf. Chr. 54,14. —
2) spannen (den Bogen): नात्यापतकृष्टशार्ङ्गः Ragh. 3,50. — 3) an sich
ziehen, in seine Gewalt bekommen, überwältigen: नक्रः स्वस्थानमासाद्य
गजिन्द्रमपि कर्पति Pañkāt. III,43 (vgl. Hit. IV,43). एष तो रामत्रयेण का-
तः कर्पति R. 4,24,35. वलवानिन्द्रियग्रानो विद्वंसमपि कर्पति M. 2,215.
तनायदा कृष्टः किं करिष्यति MBu. 4,20. — 4) an sich ziehen, erlangen:
कुलसंख्यो च गच्छति कर्पति चमकृष्यः MBu. 3,66. — 5) entziehen, mit
doppeltem acc.: अकर्पयतु तं वलम् Vor. 3,8. — 6) Furchen ziehen, be-
furchen, pflügen, einpflügen (vgl. 2. कर्प): स्वेन कर्पन्त्रियात् Lāt. 3,1.
यत् वैकेण कर्पयः RV. 8,22,6. तस्य लाङ्गलकृत्तस्य कर्पतो यज्ञमण्डलम्
R. 3,4,12. अनुलोमकृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्पति P. 5,4,58, Sch. — caus.
कर्पयति 1) ziehen: दिवि मे अन्यः पतोऽधो अन्यमचो कृषन् RV. 10,119,
11. धर्मकर्पितः । तस्य शत्रुस्य संसर्गाज्जगाम निरयं मुनिः R. 3,13,20. केशे-
षु कर्पिता Mrāku. 16,25. ausziehen, ausreißen: फलमूलानि कर्पयन् MBu.
3,2307. — 2) hin und her zerren, mitnehmen, peinigen: कर्पयामश्च मि-
त्राणि नन्दयानः शात्रवान् MBu. 3,1279. 1,8367. पुत्रदरैश्च कर्पितान् 13,
3014. मोक्षद्वारा स्वराष्ट्रं यः कर्पयत्यनवेत्तया M. 7,111. आत्मानं नियमै-
स्तेस्तेः कर्पयित्वा R. 3,13,29. 2,24,7. अधना कर्पितानाम् MBu. 13,5687.
अमकर्पितं Hip. 4,42. N. 11,12. दुःखेन कर्पिता 7,13. 9,23. अकर्पितकर्पित
M. 9,74. 10,111. = कृत्तिकर्पित 2,24. 8,111. तुन्मशोकार्कपित R. 3,
63,18. शोकः 62,1. Sī. 6,9. रागद्वेषमनवकर्पिताधियः Duṛtas. 83,11.
अङ्गवैद्यः R. 5,49,4. Vgl. u. कर्प im caus.
— अर्ति über Etwas hinziehen: फालमतिकर्पति Kauç. 20.
— अनु hinter sich her ziehen: तदास्य शत्रुतां राजा विश्वामित्रो ऽन्व-
कर्पत R. 4,34,1. अन्यया चकारेण तृतीयानुकृष्यते (vgl. u. अनुकृष्ट) Sch.
zu P. 2,3,72. anziehen: दत्तच्छदं प्रियतमेन निधीतसारं दत्ताग्रभिव्रमनुकृष्य
(v. l. für अयकृष्य, निरिक्षते च (im Spiegel) Hit. 4,13. — caus. hinter sich
her ziehen, in Anspruch nehmen: यजमानास्तु तान्दृष्ट्वा सर्वान्दीक्षानुकर्पि-
तान् MBu. 13,7281. — Vgl. अनुकर्प, अनुकर्पण, अनुकृष्ट, अनुकृष्ट.
— अय 1) abziehen, wegziehen, fortreißen, wegnehmen, entfernen: अ-
ष्टावक्त्रं पितुरङ्गे निषन्नम् । अयकर्पद्गुण पाणी MBu. 3,10615. मारुचिना-
पकृष्टे तु रायवे R. 3,32,2. 59,11. Buāg. P. 9,10,10. अयकर्पत वैदेह्याः
सकाशाद्वान्तसेधरम् R. 6,72,68. योसमयकृष्य च । दमयत्यै ततः प्रादात् N.
23,19. अयकृष्टाम्बरो दृष्ट्वा तामृषिश्चकमे तदा MBu. 1,6330. तस्य (धनुषः)
नैर्विनिपाकर्पत् 4,166. Hit. 4,13 (s. u. अनु). आनायिभिस्तामपकृष्टनक्राम्
(नदीम् Ragh. 16,55. अभिमृष्टादंशून्पकृष्य Kāt. 9,3,11. 17,12,12. उ-
दकनप्रकर्पति Kauç. 61. यावदस्य पुनर्बुद्धिं विदुरे । नापकर्पति । पाण्डवा-
नयेन MBu. 3,290. धैर्यं शोको ऽपकर्पति R. 5,71,5. पापं चास्यापकर्पति
MBu. 13,2699. 1814. 14,13. Pañkāt. III,159. एष रोगान्योगो ऽपकर्पति

Suça. 2,132,5. MBu. 2,223. 4,1589. abziehen, weglassen, vermindern
(Gegens. वर्धय): अयकर्पदेवं यावत्पञ्चदश Suça. 2,40,8. 31,14. पशुनेकी-
त्यपकृष्य Kāt. 10,1,19. ablegen, bei Seite setzen: अयकृष्य च लज्जा-
म् N. 17,32. zurückziehen, aus dem Folgenden zum Vorhergehenden zie-
hen: अग्रिमसूत्रस्य सर्वत्रग्रहणामिकापकृष्यते P. 4,1,17, Sch. — 2) span-
nen (den Bogen): धनुःश्रेष्ठमयकृष्य MBu. 4,1909. — 3) herabziehen, er-
niedrigen, entehren: पीडयन्त्यवर्गं हि आत्मानमपकर्पति MBu. 13,2186.
— caus. abziehen, entfernen: न चाहं न च ते सर्वे सामदानविभेद्वैः । न
दपैर्न युधा शक्याः सुग्रीवादपकर्पितुम् ॥ R. 4,54,11. कुतोमूलमिदं दुःखं
ज्ञातुमिच्छामि तन्नतः । विदित्वाप्यपकर्पयं शक्यं चेदपकर्पितुम् ॥ MBu. 1,
6205. herabziehen, schmälern: काच्यस्यात्मभूतं रसमपकर्पयतः (Gegens.
उत्कर्पयतः) Sāu. D. 7,21. — Vgl. अयकर्प fgg. und अयकृष्ट.

— व्यय wegziehen, fortziehen, fortschleppen: व्ययकृष्टो महात्मना Hip.
4,35. नास्ति लज्जा च ते सीतां चौरव्ययकर्पतः R. 6,88,22. abziehen, ab-
legen (ein Kleid): व्ययकृष्टाम्बरो दृष्ट्वा तामृषिश्चकमे ततः MBu. 1,5104.
wegnehmen, entfernen, fahren lassen: वैरभ्युपायैरेनासि मानवो व्ययकर्प-
ति M. 11,210. अथ धर्मात्मता चैव व्ययकृष्टा युधिष्ठिरात् । दर्शितं कृपात्वं
च MBu. 2,1361. दमयत्यो विशङ्का तो व्ययकर्पत् N. 24,36.

— अग्नि in seine Gewalt bekommen, überwältigen: अस्मानिवानिकर्प-
तो दीनान् MBu. 3,13064.

— अय 1) fortziehen, wegziehen: सिंरुशिष्णुं करौवावकर्पति Çik. 173.
v. l. आकृष्यमाणः कलिना सौहृदेनावकृष्यते MBu. 3,2358. प्रगृह्याय ध-
नुष्येकाया व्यापाशेनावकृष्य च 1599. abziehen, ablegen: स्रजश्च नावकृष्येत
(pass. mit med. Bed.) 13,5007. अयकृष्टेतरासङ्गः 3,474. abkehren: अग्रिम्
Kāt. 18,2,10. entfernen: काञ्चिदर्थं सन्मूढान्कृतकामाननुप्रियान् । नाव-
कर्पति कर्मभ्यः पूर्वमप्राप्य कित्तिवपन् ॥ MBu. 2,207. — 2) hinunterzie-
hen, abwärts nach unten gebracht, unten befindlich: रौहिण्यकृष्यो चा-
वकृष्टे Kāt. 26,7,18. 2,8,13. नवावकृष्टे ऽत्यर्थं पिष्टकाः सदाहपाका
भवन्ति unter dem Nagel Suça. 2,291,1. — Vgl. अयकृष्ट.

— अन्यय s. अन्ययकर्पण.

— व्यय abziehen, abwendig machen: कृतायां कृतनिर्देशं कृतभक्तं कृत
अमम् । भैर्यं व्ययकर्पति ते वै निरयगामिनः ॥ MBu. 13,1642.

— आ 1) heranziehen, anziehen, mit sich fortziehen: शाखाम् — पुष्करा-
ग्रेणाकृष्य Pañkāt. 80,8. R. 3,74,19. 73,32. सतैः प्रकृष्यताकृष्यत च 5,61.
19. Suça. 4,54,16. 109,11. नाकास्मायुवती वृद्धं केशेषाकृष्य चुम्बति Hit. 1.
102. Vid. 106. वाहुदण्डमाकृष्य den Arm anziehen Daçak. in Benf. Chr. 201.
11. आकर्णदेशान्तमयमाकृष्यताम् (शरः) MBu. 3,8670. Pañkāt. 120,10. आ-
चकर्पतुरन्योऽन्यम् MBu. 1,7109. नराङ्गेकृष्टिहृत्प्रतिदिनमाकृष्य नयतः क-
तात्तात् Çāntiç. 3,5. हर्ममुना सारङ्गेन वयमाकृष्टाः Çāk. 3,5. पादाकृष्टव-
तित्वलय 32. वज्रतुस्तदा वृत्ताद्यताश्चाचकर्पतुस्तदा MBu. 1,6805. N.
10,26. Mrāku. 176,2. Pañkāt. IV,12. Amar. 72. Kāçap. 13. Rāga-Tar.
3,101. Siddh. K. zu P. 3,1,13. Sāu. D. 3,7. नन्ये तद्विधिनाकृष्य कारितो
ऽस्मि MBu. 3,323. उमात्रयेण यूयं ते संयमस्तिमितं मनः । शंभोर्नयमाकृष्ट-
मयस्कात्तेन लोक्यत् ॥ Kumāras. 2,59. अयङ्गैराकर्पद्भिः किमपि हृदयम्
Çāntiç. 4,16. राज्यलोभाकृष्टः Hit. 41,14. 10,10. लोभाकृष्टचेतसा 42,7. त-
न्नावायगुणाकृष्टेन मया 63,15. Çik. 68,13. Vid. 14.149. Git. 7,30. अना-
कृष्टस्य विषयैः Ragh. 1,23. खड्गम् das Schwert (aus der Scheide) ziehen
Mrāku. 132,5. Vid. 104. Vet. 33,7. — 2) चापम् den Bogen spannen ad